नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रमों को समर्पित होगी 150वीं जयंती

हिंदी विश्वविद्यालय में तैयारी बैठक का उदघाटन

वर्धा, 26 अप्रैल 2018 : महात्मा गांधी और कस्तूरबा गांधी की 150वीं जयंती गांधी जी के 18 रचनात्मक कार्यक्रमों को समर्पित होगी। जयंती समारोह के बहाने समाज के हर वर्ग को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रम तैयार किये जा रहे हैं।

जयंती समारोह को लेकर महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय और गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में तीन दिवसीय तैयारी बैठक और कार्यशाला का प्रारंभ गुरुवार को विश्वविद्यालय में किया गया। बैठक का प्रारंभ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र, पीसफुल सोसाएटी, गोवा के कलानंद मणि, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता विश्वविद्यालय, छत्तीसगड के प्रो. शाहिद अली द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से किया गया।

बैठक में महाराष्ट्र के अलावा मध्य प्रदेश, छत्तीसगड और अन्य राज्यों के प्रतिनिधि शामिल हुए हैं। प्रारंभ में महात्मा गाँधी फ्यूजी गुरूजी सामाजिक कार्य अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. मनोज कुमार ने सामूहिक रूप से सर्वधर्म प्रार्थना

करायी। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. मिथिलेश कुमार ने किया। उन्होंने नई दिल्ली में 12 से 15 मार्च को राष्ट्रीय स्तर पर बा-बापू की 150वीं जयंती की तैयारी बैठक का संक्षिप्त सार पेश किया।

कलानंद मणि ने कहा कि बा-बापू के जीवन के १५० वर्ष २ अक्तूबर २०१९ को पूरे हो रहे हैं। आज कोई यह सवाल कर सकता है कि हम उन्हें क्यों याद करें? उन्होंने पेरिस और कोपहेगन के पर्यावरण सम्मलेन के अपने अनुभवों की चर्चा करते हुए बताया कि इन दोनों सम्मेलनों में पाकिस्तान के प्रतिनिधियों के अनुभव ने गाँधी की महत्ता पर नए सिरे से विचार करने पर बाध्य कर दिया।

उन्होंने महात्मा गाँधी के चर्चित जीवनी लेखक बी.आर.नंदा के हवाले से गाँधी के कुछ चुनिन्दा संस्मरणों का उल्लेख करते हुए बा-बापू की १५० वीं जयंती मनाए जाने की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने गाँधी के दक्षिण अफ्रीका के रचनात्मक संघर्ष का उल्लेख करते हुए कहा कि गाँधी ने वहां न केवल सत्याग्रह ही किया बल्कि दो-दो संस्थाओं की रचना भी की. दक्षिण अफ्रीका के सफल सत्याग्रह के बाद गाँधी भारत वापस लौटे तो यहाँ चल रहे स्वतंत्रता आन्दोलन के नेताओं से मिलते हैं।

उद्घाटन सत्र का अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि गाँधी हमारे अनुभव के अंग हो सकते है। आज समकालीन समस्याओं को लेकर तरह-तरह की चिंताएं व्यक्त की जाती हैं इसका सरोकार हमारे जीवन-दर्शन से है। आज चौतरफा समस्याओं से मुक्ति की कोशिशें चल रही है। महात्मा गाँधी ने अपने समय में समस्याओं को मिटाने के लिए जो प्रयत्न किया, उससे आज हम काफी लाभान्वित हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि कठिन दौर में हमें बा-बापू के

जीवन-दर्शन को नए सिरे से स्थापित करना होगा। बा-बापू को याद करने की रस्मअदाएगी से हमें बाहर निकलना होगा और उन्हें संजीदा ढंग से याद करना होगा।

उन्होंने कहा कि टेक्नॉलोजी जिस अनुपात में बढ़ती जाती है उसी मात्रा में बेकारी बढती जाती है। अगर हमें स्वावलंबन

चाहिए तो इसे गाँधी से सीखना पड़ेगा। गाँधी ने हमें स्वावलंबन का मंत्र दिया था। गाँधी हमारे लिए दूर नहीं बल्कि निकट हैं। अगर हम अच्छा पर्यावरण , सुन्दर देश-दुनिया चाहते हैं तो हमें गाँधी से सबक लेना होगा।

उन्होंने यह उम्मीद जताई कि इस तीन दिवसीय तैयारी बैठक से कार्यक्रम की ठोस रुपरेखा सामने आएगी। प्रथम सत्र के बाद समूह चर्चा में जयंती मनाने के विषयों और उपक्रमों को लेकर विमर्श किया गया।